ISSN No. : 2394-0344 REMARKING : VOL-1 * ISSUE-7*December-2014

साहित्य में जल का महत्व और वर्तमान में बढ़ता जल संकट

अमित शुक्ल
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह,
महाविद्यालय,
रीवा (म.प्र.)

सारांश

21 वीं सदी का वर्तमान समय जल संकट के चिन्तन मनन का समय है साहित्य में जल के महत्व को अनेक साहित्यकारों ने समय समय पर अपनी अभिव्यक्ति दी है, समय बदल गया है संचार क्रांति के इस दौर में जल संकट को लेकर साहित्यकारों का दायित्व और भी बढ़ गया है कि वे इसे प्राचीन काल के साहित्यकारों की तरह अपने साहित्य तें स्थान देकर इसकी भयावह परिणाम की ओर ध्यान केन्द्रित कर इससे निजाद पाने के उपाय करें। विगत अनेक वर्षों से पानी की कमी को महसूस किया जा रहा है, जल संकट कल महासंकट न हो जाये ये सोचने का वक्त आ गया है। भारत में ही नहीं विश्व में भी इसके दुरूपयोग को रोकना होगा। वर्तमान समय में जहाँ प्रत्येक व्यक्ति पानी की मांग 85 लीटर है जो सन् 2025 तक 125 लीटर होने की संभावना है।[1] 2025 तक जनसंख्या में वृद्धि होने से लगभग एक अरब 45 करोड़ के आस–पास हो जायेगी इससे प्रतिदिन पानी की माँग में कुल 8000 करोड़ लीटर की बढ़ोत्ती होगी, जिसका सीधा प्रभाव जल संसाधनों पर पड़ेगा। इस बढ़ी हुई माँग को पूरा करने के लिए भूजल के स्रोतों की ओर ताकना पड़ेगा जो अधिकांश अनेक वर्षों पूर्व ही समाप्त हो चुके होंगे। वर्तमान समय में भी वैसे ही जनचेतना की आवश्यकता है, फिर साहित्य तो समाज का दर्पण है, और रचनाओं के माध्यम से ही जन–जन को संदेश देकर जल संकट की वर्तमान समस्याओं का निदान किया जा सकता है। क्योंकि जल नहीं तो कल नहीं, जल ही जीवन है और साहित्य में जल के महत्व को नकारा नहीं जा सकता।

मुख्य शब्द : जल, साहित्य, संकट, 21 वीं सदी, जीवन

प्रस्तावना

हिमगिरी के उत्तुंग षिखर पर,
बैठ शिला की शीतल छांह।
एक पुरूष भीगे नयनों से,
देख रहा था प्रलय प्रवार।।
नीचे जल था, उपर हिम था,
एक तरल था, एक सघन।
एक तत्व की ही प्रधानता
कहो उसे जड़ या चेतन।।

साहित्य के पुरोधा जयशंकर प्रसाद जी की उपर्युक्त पंक्तियां कामायनी काव्य के प्रथम छन्द से यह स्पष्ट कर देती हैं कि एक समय ऐसा था जब आज से डेढ़ करोड़ वर्ष पूर्व पृथ्वी पर मानव जाति का उदभव जब हुआ था तब हरे भरे जंगल, झर झर बहते झरने , कल कल करती नदियो, कलरव करते पक्षी, तथा विशुद्व प्राणवायु देने वाले वातावरण के बीच मनुष्य ने जब अपनी आंखे खोली रही होंगी तब वह दृश्य कितना मनोरम रहा होगा और देखते देखते सब कुछ बदल गया। 21 वीं सदी, वैश्वीकरण के इस दौर में आज जल संकट की चिन्ता सभी को हो रही है।

जल जीवन है, यह सत्य है कि इंसान भोजन के बिना अनेकों दिन जीवित रह सकता है पर पानी के बिना नहीं। जल और जीवन का घनिष्ट सम्बन्ध है यदि जल है तो कल है जल नहीं तो कल नहीं। जैसे पहले रहीम जी ने कहा था कि बिन पानी सब सून ये वाक्य जीवन में पानी के महत्व को व्यक्त करते हैं।[2]

रीतिकालीन कवि रहीम की ये पंक्तियां मानव, मोती और आटा के लिए पानी के महत्व को रेखांकित करती हैं। जीवन और प्रकृति का सम्पूर्ण सौन्दर्य पानी पर ही निर्भर हे। इसलिए जल को जीवन कहा गया है। पानी के बिना जीवन की कल्पना करना असंभव है। सून से आशय शून्य से और निरर्थक होने से है। पानी के और भी अर्थ होते हैं जैसे चमक या कांति और स्वाभिमान हर जगह और हर अर्थ में पानी अपनी विशिष्टता मे अद्वितीय और अनिवार्य है। पानी मनुष्य कलिए ही आवश्यक नहीं हैं बल्कि यह पशु, पक्षी,

पेड़, पौधे, प्रकृति सभी के लिए उपयोगी एवं आवश्यक है। यह मनुष्य को मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रखते हुए बल में वृद्धि करता है।

21 वीं सदी का वर्तमान समय जल संकट के चिन्तन मनन का समय है साहित्य में जल के महत्व को अनेक साहित्यकारों ने समय समय पर अपनी अभिव्यक्ति दी है, समय बदल गया है संचार क्रांति के इस दौर में जल संकट को लेकर साहित्यकारों का दायित्व और भी बढ़ गया है कि वे इसे प्राचीन काल के साहित्यकारों की तरह अपने साहित्य तें स्थान देकर इसकी भयावह परिणाम की ओर ध्यान केन्द्रित कर इससे निजाद पाने के उपाय करें। आज के भूमंडलीकरण के इस दौर में भूमिगत जल की अंधाधुन्ध निकासी से इसका जल स्तर लगातार खिसकता जा रहा है। अगर जल संग्रहण के प्रति मानव ने अब जरा सी भी उदासीनता दिखाई तो देया को जल संकट के महाप्रलय के दिन देखने होंगे। मानव, पशु पक्षियों, वनस्पतियों के जीवित रहने तथा उसकी संवृद्धि हेतु जल की अत्यंत आवष्यकता है। अनेक प्रकार के औद्यौगिक कार्यों तथा खेती बाड़ी के लिए भी जल एक अनिवार्य उपयोगी द्रव्य है। जल और जीवन का चोली दामन का साथ रहा है। जीवन का उदभव ही जल से हुआ है, अब तो वैज्ञानिक जीवन के लिए जल की उपस्थिति आक्सीजन से भी अधिक मानते हैं। उनका विचार है कि जिस ग्रह पर जल, नाइट्रोजन, कार्बन और अनुकूल ताप है, वहां भले ही आक्सीजन न हो, जीवन की उपस्थिति असंभव नही है। विगत अनेक वर्षों से पानी की कमी को महसूस किया जा रहा है, जल संकट कल महासंकट न हो जाये ये सोचने का वक्त आ गया है। भारत में ही नहीं विश्व में भी इसके दुरूपयोग को रोकना होगा। मनुष्य की लापरवाही ने ही जल के संकट को जन्म दिया है। पहले से सचेत रहते तो बढ़ती जनसंख्या का प्रभाव जल संकट में उतना न पड़ता, जितना आज दिखाई दे रहा है। नदियों ने नाले का रूप ले लिया है, झरने सूखने लगे हैं। अगर अब भी इस संकट को नहीं समझ पा रहे हैं तो ये बुद्धिमानी नहीं, अपनी जड़ें हम स्वयं खोद रहे हैं। जल की बरबादी को रोकना आज की सबसे बड़ी चुनौती है। सरकार या शासन से अधिक जिम्मेदारी है आम जनता की। जगह–जगह हो रहे जल के दुरूपयोग को देश का प्रत्येक नागरिक ध्यान देने लगे और जल संरक्षण, प्रबन्धन में विशेष भूमिका निभाने लगे तो यह संकट निश्चित ही दूर हो सकता है। आज जल की कमी को देखते हुए तरह–तरह की आशंकाएँ भविष्य के लिए की जा रही हैं। यदि सचेत नहीं हुए तो वह दिन दूर नहीं जब उन 90 करोड़ लोगों में शामिल होंगे जब हम पानी को तरसेगें और जिसका सबसे बड़ा कारण है नगद खेती, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और लाइफ स्टाइल में पानी का बेतहाशा खर्च होना। अगर देखा जाये तो भारत में लगभग 60 वर्षों में जल की उपलब्धता एक तिहाई रह गई है। अतः 1952 के मुकाबले 33 फीसदी जल समाप्त हो चुका है और जनसंख्या पहले की अपेक्षा 33 करोड़ से बढ़कर 115 करोड़ हो गई है, इस प्रकार तीन गुना अधिक की वृद्धि हो चुकी है और यह अभी तीव्र गति से बढ़ती चली जा रही है। आज सभी भूमिगत जल स्तर पर निर्भर होते चले जा रहे हैं इसका परिणाम यह हो रहा है कि भूजल स्तर हर साल एक फिट की रफ्तार से नीचे जा रहा है। इससे उत्तर भारत के 11 करोड़ से अधिक लोग भीषण जल संकट से जूझ रहे हैं। यह आंकलन अमेरीकी अतंरिक्ष एजेन्सी नासा ने किया था। जमीन का सीना चीरकर लगातार पानी खींचने का ही परिणाम है कि आज देश के 5723 में से 839 ब्लाक डार्क जोन में आ चुके हैं और यह संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। इस स्थिति में देश का कोई हिस्सा नहीं बच पाया है।[3]

उत्तर भारत से लेकर दक्षिण और पूरब से लेकर पश्चिम तक हर जगह जल को लेकर मारा–मारी है। देश के दस लाख से अधिक जनसंख्या वाले 35 शहरों में किसी भी क्षेत्र में औसतन एक घण्टे से अधिक पानी की आपूर्ति नहीं की जाती है। कई शहरों में टैंकर ही जल की आपूर्ति का साधन बन चुके हैं। पानी के लिए कतारों में लगना भी अब लोगों की दिनचर्या में शामिल हो चुका है। गाँवों में स्थिति और भी खराब है, पूर्व में जो जल पाँच मिनट की दूरी पर उपलब्ध होता था वह आज आधे घण्टे चलकर उपलब्ध हो पाता है और कभी–कभी नहीं भी। राजस्थान और गुजरात के गाँवों में यह स्थिति आम है और दक्षिण के राज्य भी अपवाद नहीं हैं। एक सर्वेक्षण में भारत में 15 फीसदी जल स्रोत सूखने की स्थिति में पहुँच चुके हैं। विश्व में सबसे अधिक लगभग 20 लाख ट्यूबवेल भारत में हैं जो लगातार जमीन का सीना फाड़कर पानी खींच रहे हैं। इससे वर्ल्ड बैंक के इस आंकलन में कोई संदेह नहीं होता कि अगले 25 वर्षों में भू जल के 60 फीसदी स्रोत खतरनाक स्थिति में पहुँच जायेंगे। ये स्थिति भारत के लिए और भी दयनीय इसलिए है कि यहाँ 70 फीसदी भाग भूजल के स्रोतों से ही पूरी होती है।तब न फसल उगाने के लिए पानी होगा, न कल–कारखानों में समान बनाने के लिए, कृषि और उद्योग धंधे भी बरबाद हो जायेंगे और भारत की एक बड़ी आबादी जल की एक–एक बूँद को तरसेगी।

जल विशेषज्ञ राजेन्द्र सिंह का कहना है कि कुछ वर्ष पूर्व लोगों ने यह कल्पना भी नहीं की थी कि भारत में भूमिगत जल भण्डार कभी खाली भी हो सकते हैं। कुछ फीट की खुदाई करो बस जल हाजिर, लेकिन कुछ ही वर्षों में भारतीय जनता ने इतनी बेरहमी से इनका दोहन किया कि आज ये बड़ी तीव्र गति से खाली हो रहे हैं इसलिए आने वाले कुछ सालों में ये पूरी तरह समाप्त हो जायेंगे, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। इसकी शुरूआत हो भी चुकी है। अमेरिकी आंतरिक्ष एजेन्सी नासा की रिपोर्ट की कहती है कि 2002 से 2008 के दौरान ही देश के भूमिगत जल भण्डारों से 109 अरब क्यूबिक मीटर (एक क्यूबिक मीटर = एक हजार लीटर) पानी समाप्त हो चुका है। विगत तीन वर्षों में स्थिति ओर बदतर हुई है।[4] नेशनल इंस्टीटयूट आफ हाइड्रोलॉजी के एक अध्ययन से एक बात दिलचस्प रूप से सामने आयी है कि भारत की आर्थिक विकास की रफ्तार बढ़ने के साथ ही देश में जल संकट और भी गहरा हो जायेगा। भारत में जी.डी.पी. बढ़ने से आय में वृद्धि हो रही है इससे लाइफ स्टाइल में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है यही आधुनिक लाइफ स्टाइल के कारण पानी की खपत में बढ़ोत्तरी हो रही है। वर्तमान समय में जहाँ प्रत्येक व्यक्ति पानी की मांग 85 लीटर है जो सन् 2025 तक 125 लीटर होने की संभावना है। 2025 तक जनसंख्या में वृद्धि होने से लगभग एक अरब 45 करोड़ के आस–पास हो जायेगी इससे प्रतिदिन पानी की माँग में कुल 8000 करोड़ लीटर की बढ़ोत्ती होगी, जिसका सीधा प्रभाव जल संसाधनों पर पड़ेगा। इस बढ़ी हुई माँग को पूरा करने के लिए भूजल के स्रोतों की ओर ताकना पड़ेगा जो अधिकांश अनेक वर्षों पूर्व ही

समाप्त हो चुके होंगे। अतः सरकार तो बढ़ी हुई माँग के अनुसार जल की आपूर्ति करने में असमर्थ हो जायेगी। इसका कारण यह है कि वर्तमान समय में जल की उपलब्धता 3076 लीटर है जो उस समय तक घटकर आधे से भी कम रह जायेगी। यदि वर्तमान जल संकट को देखते हुए भविष्य की ओर देखें तो सन् 2025 में विश्व की आबादी 8 अरब और 2025 तक 9 अरब को पार कर चुकी होगी। यू. एन. वाटर का कहना है कि अगले 15 वर्षों में दुनिया के 180 करोड़ लोग ऐसे देशों में रह रहे होंगे जहाँ पानी लगभग पूरी तरह से खत्म हो चुका होगा। इन देशों में घाना, केन्या, नामीबिया सहित बड़ी संख्या में अफ्रीकी व एशियाई देशों की होगी, अभी 6 में से 1 व्यक्ति जल के लिए जूझ रहा है उस समय दो तिहाई अर्थात् साढ़े पाँच अरब लोग भीषण जल संकट से जूझ रहे होंगे। शहरीकरण से समस्या और भी अधिक जटिल होगी। वर्ल्ड बैंक के अनुसार सन् 2020 तक दुनिया की आधी आबादी शहरी क्षेत्रों में रह रही होगी। नई शहरी जनसंख्या तक पानी पहुँचाना एक कठिन चुनौती होगी। संयुक्त राष्ट्र मानकों के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन न्यूनतम 50 लीटर पानी मिलना चाहिए, पर स्थिति इससे बद्तर है। विश्व के 6 में से एक व्यक्ति को इतना पानी नहीं मिल पाता है। यानी 89.4 करोड़ लोगों को बेहद कम पानी में अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करनी पड़ती है। भारतीय पैमानों पर देखें तो एक व्यक्ति को रोजाना कम से कम 85 लीटर पानी मिलना चाहिए लेकिन भारत में 30 फीसदी लोगों को ही यह मिल पा रहा है। इनमें से अधिकांश गाँवों के हैं पर शहरों में भी हालत बिगड़ती जा रही है। सब–सहारा अफ्रीकी देशों जैसे कांगो, नाम्बीया, मोजबिक, घाना इत्यादि दूरस्थ गाँवों में तो लोगों को महीने में औसतन 100 लीटर पानी मुश्किल से मिल पाता है। इन देशों में पानी पर खर्च सकल घरेलू उत्पादन (जी.डी.पी.) के फीसदी से भी अधिक है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि आने वाले सालों में इस खर्चे में भारी बढ़ोत्तरी करनी होगी।[5]

यह वर्तमान समय की स्थिति है। इससे यह बात सामने आती है कि जल का संकट किस तरह महासंकट की ओर अग्रसर है। देखा जाये तो आने वाले वर्षों में पानी की माँग और आपूर्ति में अंतर लगातार बढ़ता जायेगा। यदि भारत का उदाहरण लें तो अभी पानी की कुल माँग 700 क्यूबिक किलोमीटर है जबकि उपलब्ध पानी 330 क्यूबिक किलोमीटर है। सन् 2050 में माँग करीब दुगुनी हो जायेगी जबकि उपलब्धता 10 गुना से भी कम रह जायेगी। पानी की माँग में इजाफा, जनसंख्या में वृद्धि की तुलना में कहीं तेजी से होगा। 1990 और 1995 के बीच यही हुआ था, इस दौरान दुनिया की आबादी तीन गुना बढ़ी, लेकिन पानी की खपत 6 गुना से भी अधिक हो गई। यू.एन. वाटर के 2025 तक के अनुमान कहते हैं कि विकासशील देशों में पानी का दोहन 50 फीसदी विकसित देशों में 18 फीसदी बढ़ेगा। वैश्विक जल संकट विशेषज्ञ और काउंसिल आफ कनाडा की सदस्य माउथी बालों ने अपनी पुस्तक 'बल्यू कविमेंट' में लिखा है कि सन् 2050 तक मनुष्य के लिए पानी की आपूर्ति में 80 फीसदी की बढ़ोत्तरी करनी होगी। प्रश्न यह है कि यह पानी कहाँ से आयेगा, अभी ये कोई नहीं जानता। पानी की आपूर्ति बढ़ाने के लिए पानी का दोहन करना ही होगा अर्थात् इससे जल संकट और भी बढ़ेगा। जिसके दुष्परिणाम उभरकर विस्थापन के रूप में आयेंगे और यह विस्थापन का सबसे बड़ा कारण जल संकट होगा। अनेक क्षेत्रों में पानी समाप्त हो चुका होगा ऐसे में लोग उन क्षेत्रों में जायेंगे जहाँ पानी उपलब्ध होगा। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार सन् 2030 तक 70 करोड़ लोगों को अपने क्षेत्रों से विस्थापित होने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। विस्थापन का एक दुष्प्रभाव यह भी होगा कि विस्थापित लोग जिन क्षेत्रों में जायेंगे वहाँ आर्थिक एवं सामाजिक समस्या जन्म लेंगी। यहाँ तक स्थाई निवासियों और विस्थापितों के बीच पानी को लेकर संघर्ष भी होगा। जिन देशों में ये विस्थापित जायेंगे वहाँ की अर्थव्यवस्था पर अतिरिक्त भार बढ़ जायेगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि आने वाले वर्षों में जल को लेकर संघर्ष बढ़ जायेगा। स्टीवन सोलोमन ने अपनी पुस्तक 'वाटर' में नील नदी के जल संसाधन को लेकर मिस्त्र एवं इथिमोपिया के बीच विवाद का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए कहा है कि दुनिया में सबसे विस्फोटक क्षेत्र पश्चिम एशिया में अगला युद्ध पानी को लेकर ही होगा।[6] इस क्षेत्र में इजरायल, फलस्तीन, जार्डन एवं सीरिया में दुर्लभ जल संस्थानों पर नियंत्रण को लेकर गहरी बेचैनी है जो युद्ध के रूप में सामने आ सकती है। अतः जल संकट को लेकर तृतीय विश्व युद्ध को नकारा नहीं जा सकता। अगर यही हालात रहे समय रहते जल संरक्षण के ठोस प्रयास न किए गए तो युद्ध को किसी भी कीमत में टाला नहीं जा सकता।

साहित्य में जल का अत्यंत महत्व है, चाहे प्राचीन काल हो या मध्यकाल प्रकृति जो आदिम युग से मनुष्य के जीवन का आधार रही है आधुनिक जीवन से वह उससे छीनती जा रही है। जिन ऋतुओं की मर्यादा, उल्लास, आनन्द, निश्छलता, सरलता सामूहिक जीवन के रंगारंग पर्व, उत्सव और सरोकार रचनाओं में दृष्टिगत थे उनके रंग आधुनिकता के रंग में फीके हो चुके हैं। साहित्य से पाठक दूर हो गया है उसका एक कारण साहित्य का प्रकृति से दूर होना भी है।

21 वीं सदी के वर्तमान समय की आवश्यकता है साहित्य में जल के महत्व को उकेरना। क्योंकि मनुष्य ने विश्व की सबसे मूल्यवान और गतिमान जीवन तत्व को प्रदूषित कर दिया है, जिस जल को मध्य काल के कवियों ने जल को प्रेम, दर्शन, जीवन, प्रकृति, प्रतीक, रूपक, बिम्ब में गूथकर एक सम्पूर्ण रूप दिया। उस साहित्य की आज पुनः आवश्यकता है, साहित्य में जल के महत्व को प्राचीनकाल से ही देखा जा सकता है। विश्व की प्रथम कविता, ऋग्वेद के 'अपसूक्त' को माना गया है।[7]

इसके पश्चात् वैदिक औपनिशदिक साहित्य में जल के संदर्भ में अपरिमित लिखा गया है। महादेवी वर्मा जी ने भी जल के बारे में लिखते हुए कहा है कि ''आग हूँ जिससे दुलकते बिन्दु हिम जल के'' इन पंक्तियों से आभास होता है कि जल और जीवन या जल और साहित्य पर जल का कितना महत्व है। साहित्य में जल को अनेक साहित्यकारों, कवियों ने गंभीरता से विचार कर महत्वपूर्ण स्थान दिया है। फिर चाहे वो कबीर हों, रहीम, सूर, मीरा, जायसी, तुलसीदास, मतिराम, देव या पदमाकर सभी ने कहीं न कहीं अपने साहित्य (कविताओं) में जल का प्रयोग किया है। रहीम ने लिखा है–

''रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।''
''पानी गए न उबरे, मोती, मानुष चून।''
''जाल पड़े जल जात बहि, तजि मीनन को मोह''
''रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाड़त छोह।।''

"धनि रहीम जल पंक को लघु जिय पिअत अधाय।"
"उदधि बड़ाई कौन है, जगत पियासो जाय।।"
तरूवर फल नहीं खात है, सरवर पियत न पान।
कर रहीम पर काज हित सम्पत्ति संचहिं सुजान।।
"पानी बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम।"
"दोनों हाथ उलीचिए यही सयानो काम।।

इसी प्रकार कबीरदास जी ने जल के बारे में कहा है कि–

"काहे री नलिनी तूं कुमिलांनी।
"तेरी नालि सरोवर पानी।।
जल में उतपति जल में बास। जल में नलिनी तोर निवास।
ना तलि तपति न ऊपरी आगि। तोर हेतु कहु कासनि लागि।।
कहै कबीर जे उदक समान। ते नहीं मुए हमारे जान।
"पानी केरा बुदबुदा अस मानुष की जात।
देखत ही छिप जायेगा, ज्यों तारा पर भात।।[8]

इस प्रकार रहीम, कबीर, पदमाकर, सूर, मीरा, जायसी, तुलसी, महादेवी, पंत, निराला अनेक कवियों ने जल के महत्व को समझते हुए अपने साहित्य में किसी न किसी रूप में उनका प्रयोग किया है। इन मध्यकालीन कवियों को भी जल की चिंता रही है उन्होंने जल संरक्षण को लेकर अपनी कविताओं में उल्लेख किया है। कबीर के साहित्य से यह पता लगता है जब अनेकों वर्ष पूर्व सिकन्दर लोदी ने नहरों से सिंचाई करने पर कर देने का नियम बनाया था। इस कारण सिकन्दर लोदी के समय निर्धन कृषक अपनी सिंचाई कुओं या तालाबों से करते थे। गरीब किसान खेतों पर पानी जमा करने हेतु खेती की मिट्टी निकालकर उसे गहरा कर देते थे। इन खेतों को निचला खेत अथवा बोहड़ा कहा जाता था। कबीर ने अपनी सखियों में इन निचले खेतों का प्रयोग करने की अभिव्यक्ति दी है।

राम नाम करि बोहड़ा
बादी बीज अघाई।
अंतिकाल सूका पड़े तो
निरफल कदे न जाई।

इस प्रकार तुलसीदास जी का ध्यान प्राचीनकाल के पवित्र जल स्रोतों की ओर गया है क्योंकि उस समय ये प्रदूषित नहीं थे सूखा होने पर भी खेतों में पर्याप्त पानी मिलता था। उन्होंने इन पंक्तियों में तालाबों को सद्गुणों का अथाह भण्डार बतलाते हुए इन्हें महापुरूष के रूप में कहा है–

समिटि–समिटि जल भरहिं तालाबा
जिमि सदुगुण सज्जन यहि आबा।

उस समय की नदियों और तालाबों को संतों के हृदय के समान पवित्र और निर्मल माना जाता था वे कहते हैं कि –

सरिता, सर निर्मल जल सोहा,
संत हृदय जस गत मद मोहा।
रस, रस सूख सूरित सर पानी,
ममता त्याग करहि जिमी ग्यानी।

इस प्रकार मध्ययुगीन कवियों ने जल की पवित्रता का उल्लेख जगह–जगह साहित्य में किया है।[9]

निष्कर्ष यह है कि पवित्र कही जाने वाली नदियाँ आज प्रदूषित हो गई हैं। आज जल के प्रदूषण और संकट का संरक्षण करना हम सभी का दायित्व है। प्राचीन कवियों व साहित्यकारों ने जिस प्रकार जल की पवित्रता और उपयोगिता को समझकर समाज के समक्ष उसकी तस्वीर प्रस्तुत की है। वर्तमान समय में भी वैसे ही जनचेतना की आवश्यकता है, फिर साहित्य तो समाज का दर्पण है, और रचनाओं के माध्यम से ही जन–जन को संदेश देकर जल संकट की वर्तमान समस्याओं का निदान किया जा सकता है। क्योंकि जल नहीं तो कल नहीं, जल ही जीवन है और साहित्य में जल के महत्व को नकारा नहीं जा सकता।[10]

संदर्भ सूची

1. ज्ञानोदय अंक 13, मार्च 2004 मासिक साहित्यिक पत्रिका, लोदी रोड नई दिल्ली, पृ. 4, 26
2. वीणा मासिक पत्रिका, अगस्त 2009, 11 रवीन्द्रनाथ टैगोर मार्ग, इन्दौर,पृ. 12, 15
3. योजना सितंबर 2009 योजना भवन संसद मार्ग नई दिल्ली अंक 9 पृष्ठ 15
4. सिंह वीरेन्द्र, संपादक, कृतिका अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका अंक 2 दिसंबर 2009उरई (जालौन) (उत्तर प्रदेश) पृष्ठ 44
5. अमर उजाला समाचार पत्र इलाहाबाद 3 जुलाई 2010 पृष्ठ 6
6. जनसत्ता समाचार पत्र नई दिल्ली दिसम्बर 2009 पृष्ठ 6
7. दैनिक भास्कर समाचार पत्र भोपाल जून 2010 पृष्ठ 5
8. जनसत्ता समाचार पत्र नई दिल्ली 4 अप्रैल 2010 पृष्ठ 3
9. जनसत्ता समाचार पत्र नई दिल्ली 28 अगस्त 2010 पृष्ठ 4
10. स्वयं का सर्वेक्षण एवं निष्कर्ष।